कबिरा खड़ा बाजार में

प्रस्तुति के बारे में:

कबीर को गुजरे सदियां बीत गई। लेकिन आज भी कबीर जन चेतना का अटूट हिस्सा हैं। कबीर अपने समय से अधिक क्रान्तिकारी और आधुनिक थे। क्या 15वीं शताब्दी में क्रांति करना आसान था? बुतशिकनों और बुतपरश्तों के बीच से निकल कर "मोको कहां ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में" कहना आसान था? कौन थे कबीर? क्या था उनके खुदा का तसव्वुर? यह नाटक इन्हीं सवालों पर अपनी बात रखता है। हानूश' के बाद भीष्म साहनी जी का यह दूसरा नाटक है। पहली बार यह नाटक दिल्ली में खुले आसमान के नीचे एम. के. रैना के निर्देशन में खेला गया। नाटक का नाम भी रैना जी के सुझाव पर ही 'कबीरा खड़ा बाजार में' रखा गया था। इस प्रस्तुति में नाटक के कुछ दृश्यों का हटा कर सीधे उस कबीर पर ध्यान केंद्रित किया गया है जिसे जनस्मृति से निकालने की लगातार कोशिश चल रही है। वह कबीर जो क्रांतिधर्मी और रुढ़िभंजक है। जो आज भी कह रहा है *कबिरा खड़ा बाजार में सबकी मांगे खैर, ना काहु से दोस्ती ना काहु से बैर*।

नाटककार: भीष्म साहनी(1915-2003) आधुनिक भारत के प्रमुख साहित्यकार हैं। उन्होंने कथा साहित्य लेखन को 'तमस' जैसे उपन्यास और 'चीफ की दावत', 'अमृतसर आ गया है' जैसी कहानियों से समृद्ध किया है। हिंदी नाटक साहित्य के परिदृश्य में उन्होंने 'हानुश', 'माधवी', 'मुआवजे' जैसे नाटकों से हस्तक्षेप किया। 'कबिरा खड़ा बाजार में' उनका सर्वाधिक मंचित और प्रशंसित नाटक है।

मंच पर : हर्ष(कबीर), पीयूष(सिकंदर लोदी/सैनिक), सोमेश (सिकंदर लोदी/सैनिक), अभिषेक(पीपा), विकल्प(बशीरा), अनुज(रैदास), अभिषेक(सेना), शिवम(आलोचक), आश्रुति (आलोचक), कृष्णा(अधिकारी) दीपशिखा(अधिकारी), बुद्धप्रिय(कोतवाल), नितीश (मौलवी/पण्डित), सक्षम

संगीत परिकल्पना: जुगेश सहयोग- अजीत (ढोलक)

वेश-भुषा: यूटी के सदस्य

पूर्वाभ्यास प्रभारी- आदर्श सहयोग- कौस्तुभ

सह-निर्देशक: शिवा

निर्देशक:अमितेश कुमार

यूनिवर्सिटी थिएटर के बारे में: साल 2018 का अंत हो रहा था, सर्दियों की आमद होने वाली थी ऐसे में कुछ छात्र एकत्रित हुए इस ध्येय से कि विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम से इतर उनके व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं के विकास के लिए भी कोई मंच होना चाहिए, जहां वह सिलेबस की दुनिया के बाहर एक दूसरे से मिलकर अपने आत्म को तलाशें। इस खोज में उनके सामने विकल्प आया एक रंग समूह बनाने का। यह समूह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों की एक स्वायत्त सांस्कृतिक पहल है। यह ध्यान में रखते हुए कि विश्वविद्यालय का अतीत इस क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियों को संजोए हुए हैं। प्रस्तुति के सिलसिले की शुरुआत कहानी मंचन से हुई जिसके अंतर्गत दो कहानियों 'सिरी उपमा जोग' और 'भोलाराम का जीव' का मंचन हुआ। समूह ने श्रुति नाटक शैली की शुरुआत की जिसके तहत प्रेमचंद जी के जयंती पर 'कफन' कहानी का नाट्य पाठ हुआ। गाँधी जी के जीवन पर आधारित प्रस्तुति 'जब वी मेट गाँधी' की प्रस्तुति के बाद समूह ने श्रीकांत वर्मा के कविता संग्रह 'मगध' की प्रस्तुति की। 'यूटी की किताबशाला' किताबों पर चर्चा की शृंखला है। कोरोना काल में रेणु की कहानी पर वीडियो प्रस्तुति और बाद में मंचीय प्रस्तुति हुई। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर समूह ने क्रांतिकारी आंदोलन पर आधारित नाटक 'कौन आज़ाद हुआ' की प्रस्तुति की। अपने चार वर्षों की यात्रा में समूह पहली बार किसी लिखित नाटक की प्रस्तुति कर रहा है। इस सत्र की शुरूआत में समूह ने प्रेमचंद की तीन कहानियों का नाट्यपाठ प्रस्तुत किया और हबीब तनवीर के नाटक 'सड़क' का मंचन किया।

आभार: प्रवीण शेखर, स्वप्निल श्रीवास्तव, सुमन शर्मा, शीतांशु और यूटी के सदस्य.